❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

समस्त देशवासियों को योगिराज श्रीकृष्ण जन्मोत्सव (जन्माष्टमी) की हार्दिक शुभकामनाएँ

वर्ष 43, अंक 35 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 27 जुलाई, 2020 से रविवार 2 अगस्त, 2020
विक्रमी सम्वत् 2077 सृष्टि सम्वत् 1960853121
दयानन्दाब्द : 197 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

भारतीय संस्कृति के आधारपुरुष - मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र जी के भव्य स्मारक -

श्रीराम मन्दिर शिलान्यास की वैदिक धर्म के ध्वजवाहकों को बधाई

विश्व दिग्-दिगांतर में वैदिक संस्कृति को स्थापित करने का मार्ग प्रशस्त करेगा यह मन्दिर

.....जब श्री राम जन्मभूमि विवाद उच्चतम न्यायालय में चल रहा था तब भी आर्य समाज की शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा पूरे प्रकरण में एक पार्टी के रूप में सक्रिय भूमिका का निर्वहन करती रही और जब सुप्रीम कोर्ट ने राम जन्मभूमि पर राम मंदिर निर्माण के हक में फैसला सुनाया तब भी समूचे आर्य जगत ने प्रसन्नता व्यक्त की और आज जब श्री राम मंदिर का शिलान्यास हो रहा है तो इस अवसर पर भी हम सब अपने हृदय की अतल गहराईयों से पूरे मानव समाज को बधाई देते हैं और मनुष्य मात्र से अपेक्षा करते हैं कि श्रीराम जी का संपूर्ण जीवन वेद के अनुसार यज्ञमय था, उन्होंने यज्ञों की रक्षा की, गुरुकुल में शिक्षा ग्रहण की, अधर्म और अन्याय से वे सदा लड़ते रहे, माता-पिता की सेवा और आज्ञापालन को उन्होंने सर्वोपरि माना, काम, क्रोध, लोभ, मोह, राग, द्वेष से रहित होकर उन्होंने मानव मात्र को एक आदर्श जीवन जीने की कला सिखाई। ऐसे महापुरुष का संदेश, उपदेश, और आदेश की प्रेरणा मानव समाज के लिए अमृत के समान है।.....

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम भारतीय संस्कृति के महान उन्नायक हैं। श्रीराम के प्रति केवल भारत ही नहीं बल्कि विश्व भर के लोगों में अपार निष्ठा है। इसीलिए तो काफी लंबे समय तक चले विवाद के बाद जब 5 अगस्त 2020 को देश के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी अपने कर-कमलों से श्री राम मंदिर का शिलान्यास करेंगे और इस अवसर पर लगभग 200 से ज्यादा अन्य महानुभाव भी उपस्थित रहेंगे। लेकिन पूरे भारत सहित विश्व में श्रीराम को अपना आदर्श मानने वाले उमंग उत्साह से फूले नहीं समा रहे। यह पूरा कार्यक्रम भारत सहित अमेरिका आदि कई देशों में भी लाइव दिखाए जाने

- शेष पृष्ठ 5 पर

सम्पादकीय

भारत सरकार द्वारा घोषित नई शिक्षा नीति की समीक्षा

नई शिक्षा नीति का आधार स्वागत योग्य लेकिन गुरुकुल कहां हैं?

तीन दशक में लम्बे अन्तराल के बाद देश को नई शिक्षा नीति-2020 को कैबिनेट की मंजूरी मिल गई है। केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री रमेश पोखरियाल निशंक और सूचना प्रसारण मंत्री प्रकाश जावडेकर ने प्रेस वार्ता कर इसकी जानकारी दी। इससे पहले 1986 में शिक्षा नीति लागू की गई थी। 1992 में इस नीति में कुछ संशोधन किए गए थे। यानी 34 साल बाद देश में एक नई शिक्षा नीति लागू की जा रही है।

बताया जा रहा है कि पूर्व इसरो प्रमुख के कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में विशेषज्ञों की एक समिति ने इसका मसौदा तैयार किया था, जिसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में कैबिनेट ने इसे मंजूरी दी है। इस नई शिक्षा नीति में स्कूली शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक कई बड़े बदलाव किए गए हैं।

खबर है कि नई शिक्षा नीति में पाँचवी क्लास तक मातृभाषा, स्थानीय या क्षेत्रीय भाषा में पढ़ाई का माध्यम रखने की बात कही गई है। इसे क्लास आठ या उससे आगे भी बढ़ाया जा सकता है। विदेशी भाषाओं की पढ़ाई सेकेंडरी लेवल से होगी। हालांकि नई शिक्षा नीति में यह भी कहा गया है कि किसी भी भाषा को थोपा नहीं जाएगा। साल 2030 तक स्कूली शिक्षा में 100 प्रतिशत जीईआर के साथ माध्यमिक स्तर तक एजुकेशन फॉर ऑल का लक्ष्य रखा गया है। यानि अभी स्कूल से दूर रह रहे दो करोड़ बच्चों को दोबारा मुख्य धारा में लाया जाएगा। इसके लिए स्कूल के बुनियादी ढांचे का विकास और नवीन शिक्षा केंद्रों की स्थापनी की जाएगी।

अगर देखा जाये नई शिक्षा नीति की लम्बे अरसे से देश को तलाश थी इस कारण इस नई शिक्षा नीति की अगर सराहना की जाये तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। क्योंकि बहुत सारे बिन्दू ऐसे हैं जिसकी देश को महती आवयश्कता थी। क्योंकि इससे सामाजिक और आर्थिक नजरिए से वंचित समूहों की शिक्षा पर विशेष जोर दिया जाएगा।

- शेष पृष्ठ 2 पर

वेद-स्वाध्याय

अपने आपको जानें

अयं कविरकविषु प्रचेता मर्त्तेष्वग्निमृतो नि धायि।
स मा नो अत्र जुहुरः सहस्वः सदा त्वे सुमनसः स्याम।।ऋक्० ७/४/४
ऋषिः वशिष्ठः।। **देवता** - अग्निः। **छन्दः** त्रिष्टुप्।।

शब्दार्थ - **अयम्** = यह **प्रचेताः अग्निः** = चेतन अग्नि **अकविषु कविः** = इन अकवियों में कवि होकर **अमत्वेषु अमृतः** = इन मरनेवालों में अमृत होकर **निधायि** = निहित है, रखा हुआ है। **सहस्वः** = हे बल-तेज-शक्तिवाले **सः** = वह तू **नः** = हमें **अत्र** = इस संसार में **मा** = कभी मत **जुहुरः** = विनष्ट कर, किन्तु हम **सदा** = सदा **त्वे** = तुझमें **सुमनसः** = अच्छे मनवाने, प्रसन्नता पानेवाले **स्याम** = बने रहें।

विनय - हम क्या हैं? यह हम नहीं जानते। हम जिसे 'हम' समझते हैं वह तो केवल बहुत-सी विनश्वर वस्तुओं का ढेर है फिर भी जो हममें ज्ञान, चैतन्य, शक्ति और आनन्द दिखाई देता है वह जिस एक वस्तु के कारण है वही हमारे अन्दर एकमात्र अविनश्वर तत्व है। यह हमारा अग्नि है, आत्मा है और वही असली हम हैं। इन हमारे देह-इन्द्रिय आदि भौतिक जड़ वस्तुओं में वही एकमात्र (प्रचेता) है, चेतन है। इन अकवियों में वह कवि है, इन अक्रान्तदार्शियों में वह कान्तदर्शी है, इन बोल न सकनेवालों में बोलने की शक्ति देने वाला है, इन असुन्दर, अकाव्यमय वस्तुओं में वह सुदर काव्यमय है। वही इन विनाशशील, मरनेवाले मर्त्य अनग्नियों में एक अविनश्वर अमृत अग्नि है। वही असली हम हैं, आत्मा हैं।

ओह! इसकी उपेक्षा कर जो अबतक हम दिन-रात दूसरी जड़, क्षणभंगुर वस्तुओं की सेवा-शुश्रूषा करने में लगे रहे हैं यह हमने कितना अनर्थ किया है। हे आत्मन्! आज तुझे पहचानकर हम देखते हैं कि इन्द्रिय मन-प्राण आदि में जो बल, तेज, सामर्थ्य दिखाई देता है वह इनमें नहीं है, वह सब तो तुझमें है, इसलिए हे अग्ने! सहस्वः! हे बल, तेज, शक्ति के भण्डार! तू इस संसार में हमारा कभी विनाश मत कर। हमने अबतक बेशक तुझ अपनी अग्नि को भूलकर बड़ा आत्मघात किया है, पर अब हम कभी ऐसा आत्मघात न करेंगे। हमें अब एकमात्र तेरी ही प्रसन्नता चाहिए। यह सब जग बेशक रूठ जाए, पर हम अब तुझे कभी रूठने न देंगे। हे अन्दर बैठे अन्तरात्मन्! जबतक हमारे प्रति तुम सुमना हो, चाहे फिर दुनियावाले हमारी निन्दा करें, धिक्कारें, हमें कुछ परवाह नहीं। इस सब मृत्य दुनिया को छोड़कर हम केवल तुझे प्रसन्न रखेंगे। चूँकि तू ही सब-कुछ है, निश्चय से हमारा सब - कुछ है।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

प्रथम पृष्ठ का शेष

नई शिक्षा नीति का आधार स्वागत योग्य लेकिन गुरुकुल कहां हैं?

...नई शिक्षा नीति में बहुत कुछ है और बहुत कुछ बदलाव भी किये गये हैं। लेकिन एक अत्यन्त कष्ट की बात है कि इस नई शिक्षा नीति में हमारी प्राचीन शिक्षा पद्धति गुरुकुलों के लिए कोई विशेष बात नहीं की गयी। ये हम इसलिए कह रहे है कि मनुष्य वैसा ही होता है, जैसी शिक्षा उसे मिलती है, और जैसी शिक्षा मिलती है वैसे ही वहां के लोगों की मानसिकता और समाज होता है। आज हमारा राष्ट्र यदि समस्याओं से ग्रस्त है तो इसका अर्थ यह है कि समाज और राष्ट्र विकास के लिए एक आदर्श शिक्षण व्यवस्था नहीं है। आज की शिक्षण पद्धति भौतिकतावाद को चरम पर ले जानेवाली, व्यक्तिगतता को महत्व देनेवाली तथा स्वार्थ को जन्म देनेवाली है। जो शिक्षा न रहकर बाजारू बन गयी है। दूसरा प्रत्येक राष्ट्र का एक उद्देश्य होता है और उस उद्देश को प्राप्त कर राष्ट्र को चरम स्तर पर ले जाना प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है। हर व्यक्ति का उद्देश्य उस देश की शिक्षा पद्धति तय करती है। इसका अर्थ यह हुआ कि राष्ट्र को उसके उद्देश तक पहुंचाने में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है और गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली से उत्तम व्यवस्था दूसरी नहीं हो सकती है, ऐसा हमारा मानना है।....

छठी क्लास से वोकेशनल कोर्स शुरू किए जाएंगे। इसके लिए इसके इच्छुक छात्रों को छठी क्लास के बाद से ही इंटर्नशिप करवाई जाएगी। इसके अलावा म्यूजिक और आर्ट्स को बढ़ावा दिया जाएगा। इन्हें पाठयक्रम में लागू किया जाएगा। सबसे बड़ी बात यह कि जीडीपी का छह फीसद शिक्षा में लगाने का लक्ष्य जो अभी 4.43 फीसद है। इसके अलावा नई शिक्षा का लक्ष्य 2030 तक 3-18 आयु वर्ग के प्रत्येक बच्चे को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करता है।

इसके अतिरिक्त नई शिक्षा नीति में छात्रों को ये आजादी भी होगी कि अगर वे कोई कोर्स बीच में छोड़कर दूसरे कोर्स में दाखिला लेना चाहें तो पहले कोर्स से एक खास निश्चित समय तक ब्रेक ले सकते हैं और दूसरा कोर्स ज्वाइन कर सकते हैं और उच्च शिक्षा में कई बदलाव किए गए हैं। जो छात्र रिसर्च करना चाहते हैं उनके लिए चार साल का डिग्री प्रोग्राम होगा। जो लोग नौकरी में जाना चाहते हैं वो तीन साल का ही डिग्री प्रोग्राम करेंगे। लेकिन जो रिसर्च में जाना चाहते हैं वो एक साल के एमए के साथ चार साल के डिग्री प्रोग्राम के बाद सीधे पीएचडी कर सकते हैं। उन्हें अब एमफिल की जरूरत नहीं होगी।

अगर भाषाओं को इस शिक्षा नीति में देखें तो सभी भारतीय भाषाओं के लिए संरक्षण, विकास और उन्हें और जीवंत बनाने के लिए नई शिक्षा नीति में पाली, फारसी और प्रान्तीय भाषाओं के लिए एक इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रांसलेशन एंड इंटरप्रिटेशन (आईआईटीआई), राष्ट्रीय संस्थान की स्थापना करने, उच्च शिक्षण संस्थानों में संस्कृत और सभी भाषा विभागों को मजबूत करने और ज्यादा से ज्यादा उच्च शिक्षण संस्थानों के कार्यक्रमों में, शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा स्थानीय भाषा का उपयोग करने की सिफारिश की गई है।

यानि देखा जाये तो नई शिक्षा नीति में बहुत कुछ है और बहुत कुछ बदलाव भी किये गये हैं। लेकिन एक अत्यन्त कष्ट की बात है कि इस नई शिक्षा नीति में हमारी प्राचीन शिक्षा पद्धति गुरुकुलों के लिए कोई विशेष बात नहीं की गयी। ये हम इसलिए कह रहे है कि मनुष्य वैसा ही होता है, जैसी शिक्षा उसे मिलती है, और जैसी शिक्षा मिलती है वैसे ही वहां के लोगों की मानसिकता और समाज होता है। आज हमारा राष्ट्र यदि समस्याओं से ग्रस्त है तो इसका अर्थ यह है कि समाज और राष्ट्र विकास के लिए एक आदर्श शिक्षण व्यवस्था नहीं है। आज की शिक्षण पद्धति भौतिकतावाद को चरम पर ले जानेवाली, व्यक्तिगतता को महत्व देनेवाली तथा स्वार्थ को जन्म देनेवाली है। जो शिक्षा न रहकर बाजारू बन गयी है। दूसरा प्रत्येक राष्ट्र का एक उद्देश्य होता है और उस उद्देश को प्राप्त कर राष्ट्र को चरम स्तर पर ले जाना प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है। हर व्यक्ति का उद्देश्य उस देश की शिक्षा पद्धति तय करती है। इसका अर्थ यह हुआ कि राष्ट्र को उसके उद्देश तक पहुंचाने में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है और गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली से उत्तम व्यवस्था दूसरी नहीं हो सकती है, ऐसा हमारा मानना है।

विद्या विक्रय नहीं की जा सकती है, बल्कि विद्या तो सबसे बड़ा दान है। इसलिए गुरुकुल पूर्णतः निःशुल्क होते हैं। गुरुकुल में कर्तव्य शिक्षा की प्रधानता है। इसलिए आचार्य कर्तव्य समझकर शिक्षा देते हैं। इसलिए समाज और सरकार का भी कर्तव्य बनता है कि वह अपनी क्षमता से थोड़ा अधिक देकर स्वयं को कृतार्थ करें क्योंकि गुरुकुल से निकलकर छात्र समाज के उत्कर्ष के लिए ही कार्य करेंगे। कारण यहाँ ज्ञान के साथ अनुभव भी प्रदान किया जाता है।

इसे एक उदहारण स्वरूप देखें तो अंग्रेजी पद्धति का प्रभाव होने के कारण जानकारी को ज्ञान माना जाने लगा है। लेकिन भारत में अनुभव को ही ज्ञान माना गया है। जब हमारी गाड़ी खराब हो जाती है तब गाड़ी को वर्कशॉप में ठीक करने ले जाया जाता है। एक बात विचार करें कि क्या वह खराब गाड़ी वर्कशॉप का इंजिनियर ठीक करता है या आज की भाषा में आठवीं या दसवीं पढ़ा हुआ कारीगर?

उत्तर मिलेगा कारीगर। क्यों? क्योंकि कारीगर ने अनुभव लेते-लेते सीख लिया। जब तक गाड़ी ठीक करनी नहीं आयेगी तब तक जानकारी लेकर क्या करेंगे? अनुभव दे दिया तो जानकारी अपने आप मिल जाएगी। गुरुकुलों में छात्रों को अनुभव देकर सिखाया जाता है। क्योंकि अनुभव किया हुआ ज्ञान जीवन पर्यन्त याद रहता है। इसलिए हमें गुरुकुल पद्धति को जीवित ही नहीं रखना चाहिए बल्कि इसे बहुत आगे लेकर जाना है क्योंकि यही शिक्षा पद्धति अपने सिंहासन पर बैठकर विश्व को मार्गदर्शन करनेवाली है। यही शिक्षा पद्धति मैकाले के पुत्रों की प्रथा को तोड़कर महर्षि पुत्रों का निर्माण करने वाली है। इस कारण हमारा सरकार से अनुरोध है कि नई शिक्षा नीति को आज के आधुनिक नजरिये से सही कहा जा सकता है लेकिन इससे भविष्य का भारत अनुभवी, ज्ञानवान और संस्कारवान नहीं हो सकता। मानव संसाधन विकास मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक जी से अनुरोध है कि गुरुकुलों की शिक्षा पद्धति पर भी ध्यान दिया जाए तभी यह भारत विश्वगुरु बन सकता है।

- ***सम्पादक***

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः' अर्थात् यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए ***मो.नं. 9650183335 पर*** सम्पर्क करें। यदि परमात्मा की व्यवस्थानुसार आपका परिजन/परिचित मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके अन्तिम संस्कार की व्यवस्था हेतु भी आप सम्पर्क कर सकते हैं।

- ***संयोजक***

क्या आत्माएं अंग्रेजी में बोलती हैं?

.....हफ को सुशांत से यह भी पूछना चाहिए था जब पंख मिल गये तो अपना हिसाब किताब फाइनल कब करेंगे? बालीवुड के भाई-भतीजावाद के खिलाफ कब उतरेंगे? ऐसे कई सवाल थे लेकिन हफ को तो बाइबल लॉंच करनी थी, ईसाइयत की कथित ताकत परोसनी थी, लोगों को जीसस के चमत्कार दिखाने थे। इसी वजह से अपने स्टूडियों में जीसस की फोटो और क्रॉस टांग दिया ताकि पूरा स्टूडियो चर्च बन जाये। हालांकि कई डॉक्टर्स का कहना है कि हफ का सुशांत की आत्मा से बात करने वाला दावा चौकाने वाला है। इस वैज्ञानिक युग में इन्हें अन्धविश्वास कल्पनाएं कहना चाहिए।....महार्षि कणाद ने अपने ग्रन्थ में तर्क दिया है कि "क्या कोई बता सकता है कि ईश्वर ने अगर किसी की आयु नियत की है तो क्या वह ईश्वर के ज्ञान में नहीं है कि उसने किसे कितनी आयु दी है। उसने किसी की आयु 80 वर्ष नियत की और 30 की उम्र में उसे सांप ने डस लिया वह मर गया। लोगों ने इसे अकाल मृत्यु कहा।" अगर ऐसा माना जाये तो सांप बड़ा और ईश्वर का वजूद छोटा हुआ?.....

हाल ही में मीडिया से लेकर बालीवुड तक सुशांत सिंह राजपूत की आत्माहत्या के मामले को हर किसी ने अपने अपने तरीके से रखा। हालाँकि सुशांत सिंह की हत्या हुई या उसनें आत्महत्या की यह भी जाँच का विषय है लेकिन एक पैरानॉर्मल एक्सपर्ट कहे जाने वाले स्टीव हफ के कुछ वीडियो सोशल मीडिया पर छाए हुए हैं। स्टीव हफ का दावा है कि सुशांत के चाहने वालो के आग्रह पर उन्होंने इस एक्टर की आत्मा से बात करने की कोशिश की है। यू ट्यूब में उनके कई वीडियो वायरल हो रहे हैं।

वीडियो में हफ सवाल करते सुनाई देते हैं कि आर यु इन द लाइट? जिसके जवाब में सुशांत की आत्मा कहती है "स्टीव आई एम गेटिंग लाइट"। स्टीव हफ पूछते हैं "आप कहाँ हैं?" सुशांत सिंह की आत्मा कहती है "मैं अपनी मां के साथ हूं।" फिर हफ पूछते हैं "तुमने कहा तुम्हें पंख लग गए?" सुशांत कहता है "हाँ मुझे पंख लग गए हैं।" हफ कहता है "यह तो कमाल है।"

दर्शक शांत होकर बड़े ध्यान से पूरी विडियो देखते रहते हैं कि कब सुशांत अपने हत्यारों के नाम बताये। कब सुशांत बताये कि क्यों वह आत्महत्या जैसा कदम उठाने पर मजबूर हुआ? वो क्यों दुखी हुआ या उस रात कौन-कौन उसके साथ थे? लेकिन हफ और सुशांत रिश्तेदारों की तरह बात करते रहे। यानि एक तरीके से लिखी गयी पूरी स्क्रिप्ट का अंत हो जाता है और ये नहीं पता चल पाता आखिर सुशांत के साथ क्या हुआ था! हालाँकि इस वीडियो को अभी तक लाखों लोग देख चुके हैं। स्टीव ने दावा किया कि सुशांत ने कहा कि वो जहां हैं बहुत अच्छे हैं।

यानि हफ सेलेब्रेटी की ही आत्मा से बात करते हैं। वरना यूरोप और अमेरिका में ऐसे न जाने कितने केस हुए जो आज तक नहीं खुले शायद हफ को उनकी आत्मा का कांटेक्ट नंबर नहीं मिला होगा! वरना लादेन से भी पूछा जाना चाहिए कि आपको पंख मिले या पूंछ? वर्ल्ड ट्रेंड सेंटर पर हमला करके कितनी हुरे मिली, मिली भी या नहीं? न हफ ने राजकुमारी डायना की आत्मा से बात नहीं की, कि आखिर उनकी मौत का भी तो राज दफन है। लेकिन वो जानते हैं अगर ऐसा कहने की भी हिम्मत करता तो ब्रिटेन पुलिस उनके साथ क्या करती, सब जानते हैं।

हफ को सुशांत से यह भी पूछना चाहिए था जब पंख मिल गये तो अपना हिसाब किताब फाइनल कब करेंगे? बालीवुड के भाई भतीजावाद के खिलाफ कब उतरेंगे? ऐसे कई सवाल थे लेकिन हफ को तो बाइबल लाँच करनी थी, ईसाइयत की कथित ताकत परोसनी थी, लोगों को जीसस के चमत्कार दिखाने थे। इसी वजह से अपने स्टूडियों में जीसस की फोटो और क्रॉस टांग दिया ताकि पूरा स्टूडियो चर्च बन जाये। हालांकि कई डॉक्टर्स का कहना है कि हफ का सुशांत की आत्मा से बात करने वाला दावा चौकाने वाला है। इस वैज्ञानिक युग में इन्हें अन्धविश्वास या कल्पनाएं कहना चाहिए।

असल में धरती का 75 प्रतिशत अन्धविश्वास अगर देखा जाये तो इनकी तथाकथित धार्मिक पवित्र पुस्तक से परोसा जाता है। जितने झूठ-पाखंड हैं उनकी जननी ये ही पुस्तक है, जो अब भारत के लोगों को बांटी जा रही हैं। यही वो पुस्तक है जो हजारों साल ये कहती रही कि औरत के अन्दर आत्मा नहीं होती तो अब कोई इनसे पूछे कि जब औरत के अन्दर आत्मा नहीं होती तो ये सुशांत की माता जी की आत्मा कहाँ से आ गयी?

हालाँकि ये सब फिल्मी दुनिया नाग नागिन, अलिफ लैला तक तो ठीक लगता है लेकिन असल जीवन में देखें तो हम इसे आसानी से पाखंड कह सकते हैं। क्योंकि इन्सान के रूप में जो दिमाग हमें मिला है वह सोचने के लिए है न की केवल किसी जादू-टोने पर विश्वास करने के लिए।

दूसरा इंग्लैंड के परामनोवैज्ञानिक थे चौटस्मिथ इन्होंने आत्माओं से बात करने का ये खेल आरम्भ किया था। एक बोर्ड पर ए से जेड और 0 से 9 अंक तक लिखे। इसके ऊपर एक धातु की कटोरी रखकर चार लोग हल्की उंगली से दबाकर रखे, या फिर एक गिलास पर एक पेपर और कैरमबोर्ड को उलटा कर उस पर अक्षर लिखें। इसके बाद दो या तीन लोग मिलकर मध्यमा या तर्जनी अंगुली को गिलास पर रखें और अपने आसपास भटक रही आत्माओं का आह्वान करें। अब आत्मा का जवाब यस आता तो समझो आत्मा आ गयी। यानि आत्मा इंग्लिश में बोलती है। ध्यान रखना इनके अनुसार मरने के बाद आत्मा सिर्फ इंग्लिश बोलती है और सबसे पहले उससे कोई कॉमन सा सवाल पूछें कि आपकी जेब में कितने पैसे हैं? या फिर आप कहां रहते हैं? ताकि आपको यह विश्वास हो जाए कि आत्मा सही जवाब दे रही है। मतलब इनके अनुसार आत्मा के पास जेब भी होती और पैसे भी।

हो सकता है स्वर्ग में कुछ खरीददारी करनी पड़ती हो, जैसे मरने के बाद पंख वंख लगवाने के पैसे देने पड़ते हो? अब इस क्रिया में एक जोखिम भी है कि कभी-कभार आसपास भटकती हुई कोई दुष्ट आत्मा भी आह्वान पर आ जाती है, और फिर जाती नहीं है। वो आत्मा आपके जीवन पर हस्तक्षेप भी कर सकती है। मतलब स्टीव हफ की किस्मत ठीक थी वरना सुशांत की आत्मा की जगह अगर बगदादी की आत्मा आ जाती तो ?

खैर! ये इनकी कथित पुस्तक के कारनामे हैं जो अकाल मृत्यु जैसे पाखंड सिखाती हैं। हमारे यहाँ भी कुछ ऐसे लोग हैं जो इस तरह के अन्धविश्वास से अपनी रोजी-रोटी चलाते हैं। वरना जैसा स्टीव हफ सुशांत राजपूत के मामले में कह रहे हैं कि अकाल मृत्यु हुई है, तो इसका जवाब ये है कि अकाल मृत्यु शब्द का अर्थ है बिना काल यानि बिना समय बिना टाइम के या असमय किसी की मृत्यु हो जाना। लेकिन सवाल यह है कि अकाल मृत्यु नहीं हो सकती क्योंकि कोई न कोई समय तो उस समय जरूर रहता होगा।

खैर! इस प्रसंग में हमने महर्षि कणाद के वैशेषिक दर्शन की मदद ली तो महर्षि कणाद कहते हैं कि अगर मृत्यु के साथ काल यानि समय शब्द का सम्बन्ध है तो अकाल कहना मूर्खता है। अब यहाँ कुछ लोगों का सवाल हो सकता है अकाल मृत्यु का मतलब मृतक बिना अपनी मौत के मर जाता है, उसका टाइम नहीं आया था लेकिन किसी कारण वश मर गया। यानि कुछ इस तरह समझिये कि दिया तेल से भरा है बाती भी पूरी है लेकिन दिया बुझ गया तो इसे घटना दुर्घटना या अकाल समय में दिए का बुझ जाना कह सकते हैं।

तो महार्षि कणाद ने अपने ग्रन्थ में तर्क दिया है कि "क्या कोई बता सकता है कि ईश्वर ने अगर किसी की आयु नियत की है तो क्या वह ईश्वर के ज्ञान में नहीं है कि उसने किसे कितनी आयु दी है। उसने किसी की आयु 80 वर्ष नियत की और 30 की उम्र में उसे सांप ने डस लिया वह मर गया। लोगों ने इसे अकाल मृत्यु कहा।" अगर ऐसा माना जाये तो सांप बड़ा हुआ और ईश्वर का वजूद छोटा हुआ? तो मतलब साफ है कि अकाल कुछ नहीं होता। जिसका कर्म व्यवस्था के अनुसार सब घटता है।

अब बात करते है पैरानॉर्मल एक्सपर्ट स्टीव हफ की जिसनें सुशांत की आत्मा के साथ बात करने का दावा किया तो उनके आत्मा के कंट्रोल रूम को गौर से देखिये, उसमें सबसे बड़ा पाखंड यही दिखाई दिया कि जीसस की तस्वीर उसके साथ क्रॉस लटकाए बैठा है। दो मशीन लगी हुई हैं उनमें कुछ बल्ब लगे हुए हैं जैसे ही बटन दबाया जाता है सुशांत सिंह की आत्मा बोलने लगती है, सामने लगी डिस्प्ले में उनकी तस्वीर दिखाई देने लगती है। यानि सब कुछ मिशनरीज के इशारे पर स्क्रिप्ट लिख कर किया गया ढोंग था ताकि हद से अधिक धार्मिक कहे जाने वाले भारत में ईसायत परोसी जा सके।

- राजीव चौधरी

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

हैदराबाद सत्याग्रह के अमर बलिदानियों को नमन

हैदराबाद सत्याग्रह, स्वाधीनता का एक अविस्मरणीय यज्ञ

हैदराबाद सत्याग्रह का संघर्ष एक हवन कुंड की तरह था। इस कुंड में आर्यों ने अपने जीवन की आहुतियां देकर स्वाधीनता की अग्नि को प्रज्वलित किया।

"मुझे पूर्व में एक आग (आर्यसमाज) फैलते हुए दिखाई दे रही है जो सारी बुराईयों को भस्म कर देगी।" सर एंड्रयूज के शब्द स्पष्ट रूप से हैदराबाद की रियासत में खरे उतरते दिखाई दे रहे थे। हैदराबाद के हिंदुओं में प्राण फूंकने का कार्य आर्यसमाज ने किया था। सन् 1936 ई. तक हिंदुओं का नेतृत्व करने वाला केवल आर्यसमाज ही था। हिंदुओं की पस्त हुई हालत को आर्यसमाज ने बड़ी दृढ़ता के साथ संवारा।

महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा स्थापित आर्यसमाज ने हिंदूसमाज के निचले तबके से लेकर सभी वर्ग के लोगों को एक झंडे के नीचे संगठित करने का प्रयास किया। भारत की खोई हुई अपनी प्राचीन संस्कृति और सभ्यता के शुद्ध स्वरूप को दुनिया के सामने उजागर करने का प्रयत्न किया। मुगलों, पठानों के आक्रमणों से जर्जर हुआ भारत अपनी पुरानी गरिमा को प्राप्त करने के लिए लालायित था, उस गरिमा और स्वाभिमान को फिर से लौटाने का कार्य आर्यसमाज ने किया। गुरुकुल खोले गये, गुरुकुलों में 14 वर्ष तक ज्ञान की दीक्षा लेकर ब्रह्मचारी जब कर्मक्षेत्र में उतरते तो ऐसे लगता जैसे कोई तेजोपुंज चला आ रहा हो। उनका धीरोदाप्त आचरण समाज को प्रभावित करता। गुरुकुलों से स्नातक बनकर निकले हुए ब्रह्मचारी अपनी धारा प्रवाह अमोघ वाणी में व्याख्यान देते तो ऐसा लगता कि कोई तेजस्वी नौजवान अपनी प्रतिभा से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर रहा हो। अनेक स्नातकों ने देश और विदेश में जाकर वैदिक धर्म की दुन्दुभी बजाई। किसी ने इन गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के बारे में लिखा था।

आयेंगे खत अरब से जिनमें लिखा ये होगा।
गुरुकुल का ब्रह्मचारी हलचल मचा रहा है।

इन पंक्तियों को सार्थक करते हुए सैकड़ों गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने हैदराबाद आर्य सत्याग्रह में भाग लिया। उसमें कई शहीद भी हुए। गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार, गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर, गुरुकुल वृन्दावन, उपदेशक महाविद्यालय लाहौर के अनेक विद्यार्थियों ने और स्नातकों ने हैदराबाद के मुक्ति संग्राम में भाग लिया। आर्यसमाज के प्रचारक, भजनोपदेशक और गुरुकुल के स्नातक, सन्यासियों ने हैदराबाद राज्य में घूम-घूमकर हिंदुओं के धार्मिक अधिकारों के लिए जन जागृति पैदा की।

भाई श्यामलाल, भाई बंशीलाल, पं. नरेंद्रजी, पं. दत्तात्रय प्रसाद, न्या. केशवराव कोरटकर, श्री चंदूलाल, बॅ. विनायकराव विद्यालंकार आदि आर्य नेता राज्य में निज़ाम की जुल्मी करतूतों का बखान करने लगे। सन् 1885 ई. में कुछ धार्मिक प्रतिबंध तो थे ही पर आर्यसमाज के उग्ररूप धारण कर लेने पर 12 अप्रैल सन् 1934 ई. को मंदिरों के अंदर भी प्रवचनों पर पाबंदी लगा दी गयी। यदि प्रवचन ही करना है तो उसका प्रारूप सरकार के सामने पहले पेश करना आवश्यक होगा, इस प्रकार का आदेश सरकार की ओर से जारी किया गया। 23 जनवरी और 29 अप्रैल सन् 1934 के सरकारी आदेश के अनुसार आर्यसमाज के बाहर हवन सत्संग अथवा उपदेश पर मनाही लगी दी गई, इसको भी स्वीकार कर जब आर्यसमाज के भीतर यज्ञ हवनादि किया जाने लगा तो निज़ाम सरकार ने उपरोक्त आदेश द्वारा प्रतिबंध लगा दिया।

निज़ाम की इस दमननीति का राज्य की हिंदू जनता पर विपरीत परिणाम पड़ा। अधिकारों को कुचलने के कारण जनता और अधिक विरोध प्रकट करने के लिए अग्रसर हुई।

खून की कहानी रंग लाई

वतन की फिक्र कर नादां,
मुसीबत आनेवाली है,
तेरी बरबादियों के मशविरे
हैं आसमानों में।।

आर्यसमाज का धार्मिक और सामाज सुधारवादी आंदोलन आग की तरह सारे राज्य में फैल चुका था। सन् 1941 तक रियासत में 241 के करीब आर्यसमाजों की स्थापना हो चुकी थी, तथा जनगणना के अनुसार आर्यसमाज के सदस्यों की संख्या 40 हजार तक पहुंच गयी थी।

भारत की धरा पर राफेल का स्वागत

29 जुलाई 2020 का दिन भारत की सुरक्षा के हिसाब से अत्यंत ऐतिहासिक माना जाएगा। काफी लंबी प्रतीक्षा और कड़े संघर्ष तथा बेबुनियाद आरोपों को पार करते हुए फ्रांस से पांच राफेल लड़ाकू विमान अंबाला एयरबेस पर तैनात हो ही गए। इस महान उपलब्धि के लिए देश के रक्षामंत्री श्री राजनाथ सिंह ने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की प्रबल इच्छा शक्ति की प्रशंसा करते हुए कहा कि राफेल उनके लिए चिंता का सबब हैं जो भारत की तरफ कुदृष्टि से देखते हैं। ज्ञात हो कि ये वो ही राफेल विमान हैं जिन्हें लेकर पाकिस्तान और चीन सबसे ज्यादा परेशान हैं और जिन्हें भारत में आने से रोकने के लिए राहुल गांधी व कांग्रेस ने एड़ी-चोटी का जोर लगा डाला था। कांग्रेस सुप्रीम कोर्ट में भी गई मगर उसे हर जगह मुंह की खानी पड़ी थी और लिखित में माफी भी मांगनी पड़ी थी।

सुप्रीम कोर्ट राफेल डील के लीक दस्तावेजों को सबूत मानकर मामले की दोबारा सुनवाई के लिए राजी हो गया था, लेकिन तब राहुल गांधी ने कहा था- कोर्ट ने मान लिया है कि 'चौकीदार ही चोर है।' इस पर भाजपा नेता मीनाक्षी लेखी ने कांग्रेस अध्यक्ष के खिलाफ अवमानना का केस दायर कर दिया था। इस पर कोर्ट ने राहुल को बिना नोटिस जारी किए ही जवाब मांगा था। राहुल ने 22 अप्रैल को माना था कि कोर्ट ने ऐसा कुछ नहीं कहा और गर्म चुनावी माहौल में जोश में उनके मुंह से यह बात निकल गई। उन्होंने अपनी टिप्पणी पर खेद जताया था। लेखी के वकील ने कहा था कि राहुल के खेद जताने को माफी मांगना नहीं कह सकते। इस पर सुप्रीम कोर्ट ने राहुल को नोटिस जारी किया था और राहुल गांधी को लिखित में माफी मांगनी पड़ी थी। विरोध का कोई और रास्ता नहीं बचा था तो अखिर में कांग्रेस ने इस बात का भी विरोध किया था कि रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने फ्रांस में राफेल विमान की पूजा के दौरान उस पर ओम क्यों लिखा? इससे पता चलता है कि कांग्रेस भारतीय संस्कृति से कितना सरोकार रखती है ओर उसे देश की सुरक्षा को लेकर कितनी चिंता रहती है। पिछले 15 से भी ज्यादा सालों से यह फ्रांस से राफेल खरीदने की डील लटकी पड़ी थी, तब यू पी ए की सरकार दो बार आकर चली गई, लेकिन राफेल नहीं आए और जब मोदी सरकार ने राफेल लाने की तैयारी की तो कांग्रेस के पेट में दर्द हाने लगा था। खैर उस दर्द की दवाई तो देश की जनता ने उसे चुनाव में हार का मुह दिखाकर अच्छे तरीके से दे दी थी। परंतु अब जब राफेल भारत की धरती पर आ गए तब भी राहुल गांधी और दिगविजय सिंग जैसे नेता अपनी आदत से बाज नहीं आए और उन्होंने फिर वही राग अलापा जिसकी उनसे उम्मीद थी। राहुल गांधी ने कहा कि मोदी जी ने अम्बानी को लाभ पहुंचाया। खैर कोई कुछ भी कहे और कहता रहे राफेल का पूरे भारत ने सहर्ष स्वागत किया है और आर्य समाज भी देश की सुरक्षा में तैनात राफेल लड़ाकू विमानों का स्वागत करता है औसके लिए भारत सरकार को बधाई भी देता है।

यूं तो राफेल विमानों को फ्रांस से मई में ही आना था, मगर कोरोना संकट के चलते इसे दो महीने के लिए टाल दिया गया था। 2022 तक सभी 36 राफेल विमान भारत को मिल जाएंगे। पहले 18 राफेल जेट अंबाला एयरबेस में रखे जाएंगे। बाकी के 18 विमान पूर्वोत्तर के हाशीमारा में तैनात किए जाएंगे। राफेल मिलने से भारतीय वायुसेना की ताकत में जबरदस्त इजाफा हुआ है। हवा से हवा में और हवा से जमीन पर वार करने की क्षमता पाकिस्तान और चीन के मुकाबले भारत की काफी बढ़ गई है। ये जेट एक साथ जमीन से आसमान तक दुश्मनों को पस्त कर सकता है। इसकी ताकत का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि एक राफेल को रोकने के लिए पाकिस्तान को दो एफ-16 विमानों की जरूरत पड़ेगी। भारत को मिलने वाला राफेल ज्यादा एडवांस है। जरूरतों को ध्यान में रखते हुए इसमें कुछ अतिरिक्त फीचर्स भी जोड़े गए हैं। राफेल की क्षमता का अनुमान इस बात से भी लगाया जा सकता है कि बालाकोट जैसी एयर स्ट्राइक भविष्य में एलओसी पार किए बिना की जा सकेगी। ये 150 किलोमीटर की दूरी से दुश्मन के इलाके ध्वस्त कर सकता है।

- आचार्य अनिल शास्त्री

आर्यसमाज के सेवा संस्थान - अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के अन्तर्गत कार्यरत सेवा ईकाई

'सहयोग' द्वारा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन वस्त्र, बर्तन एवं खिलौनों का वितरण

ग्रामीण क्षेत्र के शाहबाद डेरी क्षेत्र की झुग्गी-झोपड़ियों में लगी आग से प्रभावित परिवारों को सहयोग ने पहुंचाई राहत सामग्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा ईकाई 'अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ' का सेवा प्रकल्प ''सहयोग'' वस्त्रों की आधारभूत आवश्यकता की पूर्ति व शिक्षा के मूलभूत अधिकार के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रयासरत है। पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी की प्रेरणा से अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा संचालित सहयोग एक ऐसी कल्याणकारी दिव्य योजना है, जिससे लाखों लोग लगातार लाभ प्राप्त कर रहे हैं। प्रान्तीय स्तर पर दिल्ली में सहयोग का कार्य दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत किया जा रहा है।

कभी धनवान है कितना,
कभी इंसान निर्धन है,
कभी सुख है-कभी दु:ख है,
इसी का नाम जीवन है।।

दिनांक 19 जुलाई 2020 (रविवार) ग्रामीण दिल्ली क्षेत्र के शाहबाद डेरी की एक बस्ती मे आग लगने के कारण 80 परिवारों के छप्पर जलकर पुरी तरह खत्म हो गए। लोगों के सभी जरूरतों का सामान राख हो गया। यहाँ सभी लोग कबाड़ बेचने-खरीदने का कार्य करते हैं।

मासूम बच्चें आग से उजड़े अपने घरों को सँवार भी नहीं पाए थे कि मौसम की मार ने भी उनकी समस्याओं को बढ़ा दिया। बारिश के कारण वहाँ सभी जगह कीचड़ व पानी भर गया, जिसकी वजह से गाड़ी भी दूर खड़ी की और सामान को रिक्शा से लेकर गए।

ऐसे विकट समय में सहयोग ने आगे बढ़कर लोगों की बर्तन-वस्त्र-चप्पल-जुतें आदि भेंट करके मदद की। सभी लोगों के नाम लिखकर उन्हें एक एक को बुलाकर कपड़े व अन्य सामान भेंट किया।

विशेष - यदि आप अपने क्षेत्र के गरीब, बेसहारा परिवारों के बीच वस्त्रादि वितरण कराना चाहते हैं तो 9540050322 पर सूचना दें।

आपका योगदान - 'सहयोग' के माध्यम से आप इस सेवा का हिस्सा बन सकते हैं। आपके घर में बहुत-सा ऐसा सामान होता है जो आपके काम नहीं आता है किन्तु किसी अन्य के लिए वह बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। आप वह सामान हमें दें हम उसे हर जरूरतमंद तक पहुँचाएंगे।

आप हमें 'वस्त्र, पुस्तकें, खिलौने, जूतें, चप्पल, आदि' सामान दे सकते हैं। आप सामान एकत्र करके सहयोग टीम को 9540050322 पर कॉल करें। हमारी गाड़ी आपके घर से सामान लेकर आएगी। आप अपना सहयोग हमारे कार्यालय आकर भी दें सकते हैं। कार्यालय पता है-

आर्य समाज मन्दिर,
डी.सी.एम. रेलवे कोलोनी,
निकट फिल्मिस्तान,
दिल्ली-110007

प्रेरक प्रसंग

क्रूरता और शूरता : कहानी एक वीर बालक की

महात्मा ननारायण स्वामीजी महाराज प्रथम सर्वाधिकारी के रूप में गुलबर्गा (निजाम राज्य) में बन्दी बनाये गये। एक दिन उन्हें निजाम सरकार की कोर्ट में पेश किया गया। महात्माजी को प्यास लगी। उन्होंने जल माँगा। किसी ने भी पानी न दिया। सरकार की क्रूरता की कोई सीमा ही न थी, परन्तु आर्यो की शूरता भी वन्दनीय थी। एक बारह वर्ष का आर्य बालक कोर्ट में जैसे-कैसे पहुँच गया था। उसने आस-पास से कहीं से जल का एक गिलास लाकर पूज्य महात्माजी को दिया।

इससे सरकार चिढ़ गई। इसी अपराध में उसे बन्दी बनाया गया। जब उसे छोड़ा गया तो उसने पुन: सत्याग्रह करके जेल जाने का आग्रह किया। आर्यकुमारों को सत्याग्रह करने की आज्ञा न थी। वह फूट-फूटकर रोया और सत्याग्रह की अनुमति माँगी। उसकी श्रद्धा व धर्मभाव को देखकर उसे जेल जाने की अनुमति मिल गई। जब तक सत्याग्रह चलता रहा वह बार-बार सत्याग्रह करके जेल जाता रहा।

सत्याग्रह की विजय के पश्चात् उसने गुरुकुल चित्तौड़गढ़ में प्रवेश पाया। वहाँ रुग्ण हो जाने के कारण सन् 1940 में उसकी मृत्यु के दु:खद समाचार को सुनकर सारा आर्यजगत् शोकमग्न हो गया। सत्याग्रह के इतिहास में लिखा है कि इस वीर बालक व्यंकट राव के साथ एक और आर्यबालक था। उसका नाम नहीं मिलता। वह भी बार-बार जेल जाता रहा।

वे माता-पिता धन्य थे जिन्होंने ऐसे बालकों को जन्म दिया। वे बालक धन्य थे जिनमें इतनी छोटी आयु में ही इतना साहस था। आज तो बच्चों में धन-सम्पदा, भोग-एश्वर्य बटोरने व लूटने के भाव ही भरे जाते हैं। तप, त्याग व सादगी का उपहास करना सिखाया जाता है, परन्तु स्मरण रखिए, लोकमान्य तिलक ने लिखा है-''Luxry leads to downfall'' अर्थात् भोग-विलास पतनोन्मुख कर देता है।

ईश्वर करे कि हमारी भावी पीढ़ी ऐसे शूरवीर बालकों से सत्प्रेरणा लेकर कुछ कर दिखाने के योग्य बने।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

प्रथम पृष्ठ का शेष

की भी बात कही जा रही है। श्री राम मंदिर को लेकर यह भी कहा जा रहा है कि यह मंदिर भारत का दूसरा सबसे बड़ा, और भव्य तथा अत्यंत विशाल मन्दिर होगा। आर्य समाज की ओर से श्रीराम मंदिर के शिलान्यास की विश्व के कोने-कोने में रहने वाले समस्त वैदिक धर्म के अनुयायियों एवं देशवासियों को बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं।

आर्य समाज सदा से श्री राम जी के जीवन आदर्शो को अपनाने का पक्षधर रहा है। समय -समय पर हमारे यहां श्रीराम जी की शिक्षाओं को लेकर बड़े-बड़े कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं, जब श्री राम जन्मभूमि विवाद उच्चतम न्यायालय में चल रहा था तब भी आर्य समाज की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा पूरे प्रकरण में एक पार्टी के रूप में सक्रिय भूमिका का निर्वहन करती रही और जब सुप्रीम कोर्ट ने राम जन्मभूमि पर राम मंदिर निर्माण के हक में फैसला सुनाया तब भी समूचे आर्य जगत ने प्रसन्नता व्यक्त की और आज जब श्री राम मंदिर का शिलान्यास हो रहा है तो इस अवसर पर भी हम सब अपने हृदय की अतल गहराईयों पूरे मानव समाज को बधाई देते हैं और मनुष्य मात्र से अपेक्षा करत हैं कि श्रीराम जी का संपूर्ण जीवन वेद के अनुसार यज्ञमय था, उन्होंने यज्ञों की रक्षा की, गुरुकुल में शिक्षा ग्रहण की, अधर्म और अन्याय से वे सदा लड़ते रहे, माता-पिता की सेवा और आज्ञापालन को उन्होंन सर्वोपरि माना, काम, क्रोध, लोभ, मोह, राग, द्वेष से रहित होकर उन्होंने मानव मात्र को एक आदर्श जीवन जीने की कला सिखाई। ऐसे महापुरुष का संदेश, उपदेश, और आदेश की प्रेरणा मानव समाज के लिए अमृत के समान है।

आर्य समाज ने श्री राम मंदिर निर्माण तीर्थ ट्रस्ट से यह अपील भी की थी कि श्री राम मंदिर परिसर में एक दिव्य यज्ञशाला का निर्माण भी किया जाए। इसके लिए मंदिर निर्माण ट्रस्ट के महासचिव श्री चंपत राय जी और कोषाध्यक्ष श्री गोविंद गिरि जी महाराज को हमने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से पत्र भी भेजा था। वस्तुत: आर्य समाज हमेशा से अपने वैदिक सिद्धांतों और मान्यताओं की रक्षा करते हुए देश और वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के प्रत्येक कार्य में पूर्ण रूप से सक्रिय भूमिका निभाता आया है और निभाता रहेगा। अयोध्या में श्री राम मंदिर शिलान्यास 5 अगस्त की सभी देशवासियों को पुन: बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं।

- विनय आर्य, महामन्त्री

लड़कियां हीनभावना को कैसे दूर करें?

- डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती

.....जब वे देखती हैं कि अमुक क्षेत्र में केवल लड़कों का ही प्रवेश है लड़कियों का नहीं। यद्यपि सभी कार्यों में पुरुषों की अपने से तुलना करना बुद्धिमत्ता नहीं है। प्रकृति ने स्त्रियों में प्रेम, मृदुता, करुणा, सेवा, समर्पण के गुण पुरुषों से अधिक दिये हैं और पुरुषों में साहस, कठोरता आदि देखे जाते हैं परन्तु फिर भी आज लड़कियाँ पुरुषोचित कार्यों में पीछे नहीं हैं। यदि तब भी किसी कारणवश उनमें हीन भावना आ जाती है तो उन कारणों को जान समुचित समाधान किया जा सकता है। लड़कों जैसे वस्त्र पहनना, अर्धनग्न रहना आदि से पुरुषों के समान दिखना प्रशंसनीय कार्य नहीं है।.....

हीन भावना से अभिप्राय दूसरों की तुलना में अपने को न्यून समझ लेना है। इसका प्रादुर्भाव दूसरे लोगों द्वारा उत्पन्न भ्रामक स्थिति, शक्ति की न्यूनता अथवा माता-पिता द्वारा लड़कों को अधिक महत्व एवं उन्हें अधिक सुविधा देने से भी आ जाती है। जब माता-पिता यह कहते हैं कि तुम्हें तो दूसरे घर जाना ही है तो लड़की यह समझ लेती है कि इस परिवार में मेरा दर्जा दूसरी श्रेणी का है। प्राथमिकता तो मेरे भाईयों की ही है।

जब कोई लड़की किसी चुनौती भरे कार्य को करना चाहती है उस समय भी परिवार के लोग उसे हतोत्साहित कर देते हैं। यद्यपि शिक्षित परिवारों में आजकल लड़की और लड़कों में कोई भेदभाव नहीं किया जाता और उन परिवारों की लड़कियाँ आज शिक्षा, खेल तथा अन्य कार्यों में कीर्तिमान् स्थापित कर रही हैं।

सर्कस में शेरों को प्रशिक्षित करने वाले एक मास्टर का इंटरव्यू छपा था जिसे बताना उचित रहेगा। उसका कहना था कि हमारे सिखाने से सिंह अपना हिंसक और आक्रामक स्वभाव नहीं बदल लेते हैं। हम उन्हें भोजन देने से पहले सिखाते हैं और किसी खेल में अपना कार्य सही विधि से करने पर उन्हें उनका भोजन देकर प्रोत्साहित करते हैं। दूसरी बात यह है कि जब वह अवसर पाकर हम पर आक्रमण करना चाहता है तब चाबुक या अपने आप को सावधानी से उसके प्रहार से सुरक्षित रहकर हम उनके मस्तिष्क में यह बिठा देते हैं कि तुम किसी भी विधि से हम पर आक्रमण नहीं कर सकते। अर्थात् हम अपने आप को उस से अधिक चतुर और शक्तिशाली सिद्ध कर देते हैं।

लड़कियों में भी इसी भाँति हीन ग्रन्थी का विकास होता है। जब वे देखती हैं कि अमुक क्षेत्र में केवल लड़कों का ही प्रवेश है लड़कियों का नहीं। यद्यपि सभी कार्यों में पुरुषों की अपने से तुलना करना बुद्धिमत्ता नहीं है। प्रकृति ने स्त्रियों में प्रेम, मृदुता, करुणा, सेवा, समर्पण के गुण पुरुषों से अधिक दिये हैं और पुरुषों में साहस, कठोरता आदि देखे जाते हैं परन्तु फिर भी आज लड़कियाँ पुरुषोचित कार्यों में पीछे हैं। यदि तब भी किसी कारणवश उनमें हीन भावना आ जाती है तो उन कारणों को जान समुचित समाधान किया जा सकता है। लड़कियों जैसे वस्त्र पहनना, अर्धनग्न रहना आदि से पुरुषों के समान दिखना प्रशंसनीय कार्य नहीं है।

13-14 वर्ष पश्चात् जब मासिक स्राव होने लगता है तो इस अप्रत्याशित घटना से वे भयभीत हो जाती हैं। उस समय समझदारी से उसे आश्वस्त करना चाहिये कि मासिक स्राव तुम्हारे सफल मातृत्व का लक्षण है और इस से शरीर की सारी अशुद्धियाँ बाहर निकल जाती हैं। तुम्हें इससे भयभीत नहीं होना चाहिये। जैसे मल-मूत्र की प्रवृत्ति होती है वैसे ही यह भी एक स्वाभाविक प्रवृत्ति है।

- क्रमशः

Makers of the Arya Samaj : Swami Shraddhanand Ji

Continue From Last issue

.....When Munshi Ram arrived at the place of the lecture, he felt very surprised for in the audience he saw some Englishmen. But he was all the more surprised when he listened to the lecture. He wondered how a man who knew only Sanskrit could be so interesting and convincing. .....

.....Swami Dayanand heard him patientlyand kept quiet. But next day in the course of his lecture the Swami said, "I will always speak the truth, come what may. 1 do not care for the Collector nor am 1 afraid of the Commissioner. Even the Governor cannot hold me back from telling the truth. I stand for truth and I will die for it." ....

In the meantime his father's health went from bad to worse, so Munshi Ram set out for Taiwan. When he reached home his father showed him his will. He had divided his lands and houses equally between his sons, but had left all the cash and ornaments to Munshi Ram. Munshi Ram thought it would be unjust on his part to take all that. So he tore the will into pieces. This made his father believe all the more in his goodness. After a few days his father died. His dead body was cremated according to the Vedic rites. After his death all the property was divided equally amongst the brothers.

For some time after this Munshi Ram divided his time between his practice and the Arya Samaj. But as time passed the Arya Samaj came to claim more and more of his attention. He took part in debates. He organized prayer meetings of the families of the Arya Samajists. He delivered lectures on theArya Samaj. He also helped L. Dev Raj of Jalandhar to devise new ways for collecting funds for the Arya Samaj. Two of these may be mentioned here. One was that every Arya Samajist was asked to set apart a handful of flour every day. The other was that the Arya Samajists did not destroy waste paper but sold it to help the funds oftheArya Samaj.

At the same time Munshi Ram took seriously to the study of the Shastras. The need of this was impressed upon him by Pt. Guru Outt and other devoted young men. This study not only increased his knowledge, but also enabled him to face disappointments with calmness. In other words, it strengthened his character. Munshi Ram was doing well in his practice at this time. He was a good speaker and knew the law well. For these reasons he was much sought after by litigants.

It is said about a certain Sikh gentleman that he wanted to engage a lawyer for his case. He went about the courts and heard every lawyer speak. None impressed him very much, until he heard Munshi Ram argue a case in court. He was so impressed that he engaged him for his case with a fee ofRs. 1,000. After sometime Munshi Ram's practice began to dwindle because he did not accept cases which involved fraud or dishonesty of any kind. He never regretted this, however, for his profession did not mean much to him. TheArya Samaj was everything. He was one ofthoseArya Samajists who practise what they believe. For instance, he believed that women should not be kept in purdah. So he asked his wife to discard it. Then he took her out with him on long walks. This was something very unusual in those days.

He also believed in educating girls. So he sent his eldest girl t? a local girls' school which was run by a Christian mission. He was, however, surprised to fmd one day that the little girl was singing a song about Christ. This pained him very much. So with the help ofL. Oev Raj he founded a girls' school. This is now known as the Kanya Maha Vidyalaya ofJalandhar. It is a fine institution and has a large number of girls on its rolls.

Munshi Ram now felt that it was necessary to have a newspaper to make the work and the ideals of the Arya Samaj popular. He therefore started the *Sad Dharm Pracharak.* Sixteen other gentlemen each paid Rs. 25, but after a while Munshi paid them off. Then he supported it by himself. This paper rendered a great service to the cause oftheArya Samaj. Though it was at first published in Urdu, yet its Urdu was such as contained a very large number of Hindi words. In this way its readers came to be familiar with Hindi also.

Munshi Ram was an untiring worker in the cause ofthe Arya Samaj, and he spent much of his time in visiting new places to establishArya Samajees there. He was a fearless man, and spoke strongly against those who did not live up to the creed of the Arya Samaj. By doing so he made many enemies. But he was not afraid ofthem. About this time the Kumbh fair was held at Hardwar. Munshi Ram worked hard for it and was put incharge of the Prachar work of the Arya Samaj there.

But his life became darkened by death. His eldest brother-in-law died, and he felt his loss very much. Then he heard the sad news of the death of Pt. Guru Outt. Both of them were great friends and fellow workers in the same cause. So he felt very sad at this loss. L. Sain Oas, the leader of the Arya Samaj, also died. This was a great blow to the cause oftheArya Samaj.

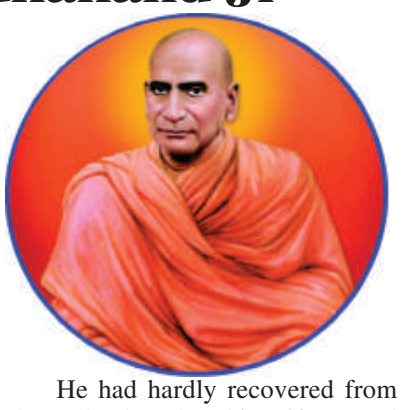

He had hardly recovered from these shocks when his wife passed away. She was a very good woman, and her death caused him much grief. After her death he found a message that she had left for him. It said, "I am about to die. Please forgive all my faults. You will probably get a better, wiser and prettier wife than myself. But please do not forget the children. Good-bye." These words touched the heart of Munshi Ram very much. He vowed never to marry again, and he kept his vow.

At this time he was elected President ofthe Arya Pritipidhi Sabha, Lahore. This was the chief organization of the Arya Samajees. But this proved a very difficult job for him. It became all the more difficult on account of the differences between the Arya Samaj ists. On the one hand, there were some who thought that the O. A.V. College, Lahore was of great importance. On the other hand, there were others who did not think so. This struggle lasted long. In the end the Arya-Samaj came to be divided into two camps. One party was led by L. Hans Raj, Principal ofthe O.A.Y. College, Lahore. The other was led by MunshiRam.

To be continued.....

With thanks By:
"Makers of Arya Samaj"

Regn. No. S - 8149/1976
Email : aryasabha@yahoo.com
Website : delhisabha.org

✿ ओ३म् ✿

२३३६०१५०
२३३६५६५६
फैक्स : २३३६५६५६

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं०)

The Delhi Arya Pratinidhi Sabha

१५–हनुमान् रोड, नई दिल्ली – ११०००१

क्रमांक : 2020-21/103/दिल्ली सभा   दिनांक : 1 अगस्त, 2020

कोरोना महामारी (अनलॉक-3) में सरकार द्वारा जारी आवश्यक दिशा-निर्देश समस्त आर्यसमाजों के अधिकारीगण कृपया ध्यान दें 31 अगस्त, 2020 तक लागू रहेंगे यें नियम

माननीय महोदय/महोदया,

सादर नमस्ते!

आपको विदित ही है कि वैश्विक महामारी कोरोना के कारण भारत सरकार द्वारा जारी दिशा-निर्देशों के चलते सभी धार्मिक संस्थाएं बंद कर दी गई थीं। भारत सरकार के निर्देशानुसार 8 जून, 2020 से लागू अनलॉक -1 में कुछ छूट दी गई तथा सभी धार्मिक संस्थाओं में धार्मिक - सांस्कृतिक गतिविधियां आरंभ हुईं। अनलॉक-2 के दिशानिर्देशों में भी कोई विशेष छूट नहीं दी गई और अब 29 जुलाई, 2020 को जारी अनलॉक-3 के दिशा-निर्देशों में भी कोई विशेष छूट नहीं दी गई हैं। हमारे धार्मिक संस्थानों के लिए वही अनलॉक-1 के दिशा-निर्देश ही 31 अगस्त, 2020 तक लागू रहेंगे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में हम सबको सावधानीपूर्वक कार्य करने हैं जिससे हमारे आर्यसमाज मन्दिर एवं संस्थान को या हमारे सहस्यगणों को यह महामारी प्रभावित न कर सके। अतः दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आप सबसे निम्न बिंदुओं पर विशेष ध्यान देने का अनुरोध करता हूं -

* अभी कुछ दिन यज्ञ वेदी पर 4-5 आर्यजन ही यज्ञ करें। यदि अधिक लोग शामिल हों तो शारीरिक दूरी - दो गज की दूरी का विशेष ध्यान रखा जाए।
* अगस्त माह - 31 अगस्त, 2020 तक सप्ताहिक सत्संग का आयोजन न किया जाए। ऑनलाइन सत्संगों की व्यवस्था करने का प्रयास करें।
* स्वास्थ्य की दृष्टि से योगासन आदि की कक्षाएं 5 अगस्त से मास्क एवं दो गज की अनिवार्य शारीरिक दूरी के साथ आरम्भ किए जा सकेंगे।
* स्वतन्त्रता दिवस के आयोजन मास्क एवं दो गज की अनिवार्य शारीरिक दूरी के साथ किए जा सकते हैं।
* यज्ञशाला तथा सत्संग हॉल के बाहर हाथ धोने की सुचारू व्यवस्था हो। सभी सम्मिलित लोगों की थर्मल स्क्रीनिंग की जाए। सभी आयोजन में शारीरिक दूरी का विशेष ध्यान रखा जाए।
* विवाह व सामाजिक कार्यक्रमों को आयोजित न करने का प्रयास किया जाए। यदि आयोजन हों तो सरकारी दिशा-निर्देशों के अनुसार सम्मिलित व्यक्तियों की संख्या 50 से ज्यादा न हो।
* विवाह आदि आयोजन हेतु आवेदन पत्र में एक बिंदु लिखा जाएगा कि 'मैं कोविड-19 के बचाव के लिए सरकार द्वारा निर्देशित नियमों का पालन करूंगा।'
* किसी भी समारोह/कार्यक्रम/उत्सव में शामिल लोगों के मोबाइल में आरोग्य सेतु एप्प अवश्य इंस्टाल होना चाहिए।
* ध्यान दिया जाए कि 65 वर्ष से अधिक आयु लोग/गम्भीर बीमारी से ग्रस्त लोग, गर्भवती महिलाएं एवं 10 वर्ष की आयु से छोटे बच्चे किसी आयोजन में सम्मिलित न हों।
* सभी व्यक्ति तथा आर्य समाज के सहयोगी सदस्यगण अनिवार्य रूप से मास्क अवश्य पहनें।
* आयोजन से पहले और बाद में सफाई की विशेष व्यवस्था होनी चाहिए।
* समाज के उत्सव, वेद प्रचार सप्ताह, निर्वाचन आदि की कोई भी गतिविधि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा/दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अगली सूचना तक स्थगित रहेगी।
* सरकार द्वारा दिए गए दिशा-निर्देशों का पालन अवश्य करें।

भवदीय

(धर्मपाल आर्य)
प्रधान, मो. : 9810061763

नि:शुल्क सत्यार्थ प्रकाश वितरण योजना

आइए, सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार-प्रसार को मिलकर करें गति प्रदान

मानव समाज को सन्मार्ग दिखाने वाले महर्षि देव दयानन्द जी द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश उनकी विशेष रचनाओं में से एक प्रमुख रचना है। सत्यार्थ प्रकाश को पढ़कर लाखों लोगों के जीवन प्रकाशित हुए हैं। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने सत्यार्थ प्रकाश को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प धारण किया हुआ है। इस लोकोपकारी कार्य के लिए सभा ने स्थाई निधि की योजना बनाई है। जिसके ब्याज से प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश लगातार विश्व की संस्थाओं में भेजे जाते हैं। सभा के प्रयास और आप सबके सहयोग से सत्यार्थ प्रकाश भारत के समस्त महत्वपूर्ण संस्थानों में, पुस्तकालयों में तथा सभी दूतावासों में, स्कूल-कालेजों में लगातार पहुंचाए जा रहे हैं। इस महान कार्य में हमें निरंतर सफलता मिल रही है।

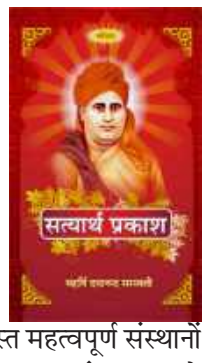

सभा का प्रयास है कि सत्यार्थ प्रकाश भारत के 135 करोड़ नागरिकों के हाथों में पहुंचे तथा विश्व के 700 करोड़ से ज्यादा लोगों के जीवन स्वामी दयानंद जी की इस अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश से प्रकाशित हों। आइए, सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार-प्रसार को मिलकर गति प्रदान करें।

* इसके लिए आप अपने आर्यसमाज की ओर से या संस्था की ओर से अथवा अपने परिवार की ओर से, अपने बड़े-बुजुर्गों के जन्मदिवस/स्मृति में एक स्थाई निधि बनवाएं। जिससे लगातार यह सेवा कार्य चलता रहे।
* अपने बच्चों के जन्मदिन पर, विवाह की वर्षगांठ पर स्वजनों को भेंट करें और सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार में सहयोग करें।
* इस महान परोपकारी सेवा में कुछ-न-कुछ आर्थिक सहयोग अवश्य दें।

अधिक जानकारी के लिए अथवा सहयोग हेतु सम्पर्क करें -

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15- हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

Email : aryasabha@yahoo.com

अन्तर्राष्ट्रीय नि:शुल्क ऑनलाइन सत्यार्थ-प्रकाश प्रतियोगिता 2020

वेद गुरुकुलम करालमन्ना, जिला-पालक्काड, केरल एवं आर्य समाज सेक्टर- 11 द्वारका, नई दिल्ली द्वारा संयुक्त रूप से श्रीमती गिन्नी देवी आर्य-रत्न पं. रतिराम शर्मा के नाम से अन्तर्राष्ट्रीय नि:शुल्क ऑनलाइन सत्यार्थ प्रकाश प्रतियोगिता परीक्षा 2020 का आयोजन किया जा रहा है।

परीक्षा : 29 नवम्बर 2020 (रविवार)
समय: प्रातः10 से दोपहर 12 बजे

प्रश्न-पत्र मलयालम, संस्कृत, तमिल, कन्नड़, तेलुगु, मराठी, गुजराती, पंजाबी, ओड़िया, बंगाली, असमियाँ, नेपाली, हिन्दी, इंग्लिश और फ्रेंच भाषा में होंगे। आवश्यकता पड़ने पर प्रश्न पत्र अन्य भाषाओं में भी हो सकते है। इस प्रतियोगिता के विजेताओं को नगद पुरस्कार राशि और प्रमाण पत्र भी प्रदान किये जायेंगे। अधिक जानकारी के लिए वेबसाइट पर जाएँ- https://sathyarthprakash.vedagurukulam.org

- संयोजक

शोक समाचार

आचार्य श्री देवेन्द्र आर्य जी का निधन

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ नई दिल्ली के अन्तर्गत संचालित माता लीलावन्ती श्रीकृष्ण वैदिक कन्या इंटर कालेज, खुशीपुरा मथुरा के प्रबन्धक श्री आचार्य देवेन्द्र आर्य जी का दिनांक 19 जुलाई, 2020 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

श्री वीरेन्द्र कुमार मित्तल जी का निधन

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास उदयपुर के सदस्य एवं डॉ. असित मित्तल जी के पूज्य पिता श्री वीरेन्द्र कुमार मित्तल जी का दिनांक 30 जुलाई, 2020 को दिल्ली में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

श्री मनोज आर्य जी को मातृशोक

आर्यसमाज फिरोजपुर छावनी (पंजाब) के यशस्वी महामन्त्री श्री मनोज आर्य जी की पूज्या माताजी श्रीमती सावित्री देवी आर्या जी का 31 जुलाई, 2020 को अकस्मात निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

खेद व्यक्त

खेद है कि कोरोना वायरस से उत्पन्न संक्रमण की वैश्विक महामारी के कारण सम्पूर्ण भारत में लागू लॉक डाउन की स्थिति के चलते आर्यसन्देश साप्ताहिक माननीय सदस्यों को डाक सेवा द्वारा नहीं भेजा जा रहा है। अतः यह अंक भी ई-पत्र के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। कपया घर में रहें - स्वयं स्वस्थ रहें और परिवार के साथ-साथ समाज को भी स्वस्थ बनाए रखने में सहयेाग करें। - *सम्पादक*

समाचार संशोधन

खेद है कि आर्यसन्देश के गत अंक 20 से 26 जूलाई, 2020 में पृष्ठ 7 पर प्रकाशित शोक समाचार - श्री कालीचरण खन्ना का निधन में उन्हें आर्यसमाज यमुना नगर का सह कोषाध्यक्ष लिखा गया है। कृपया इसे सुधारकर आर्यसमाज रोहतास नगर, शाहदरा दिल्ली के माननीय सह कोषाध्यक्ष पढ़ा जाए। सम्पादक मंडल इस भूल हेतु खेद व्यक्त करता है।

- सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 27 जुलाई, 2020 से रविवार 2 अगस्त, 2020

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 30-31 जुलाई, 2020

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 29 जुलाई, 2020

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वाधान में जूम वैबिनार द्वारा

श्रावणी उपाकर्म एवं श्री कृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में

वैदिक दर्शनों का स्वरूप

सान्निध्य : आचार्य सत्यजित् आर्य जी (रोजड़)

27 जुलाई से 9 अगस्त प्रात: 07.35 से 08.30 बजे

कृपया अपनी शंकाएं शनिवार, 8 अगस्त तक श्री सुरेश चंद्र गुप्ता जी 8010293949 को भेज देवें। समाधान 9 अगस्त को किया जाएगा।

फेसबुक से लाइव जुड़ें
fb.com/thearyasamaj

जूम एप्प लिंक से जुड़ें
https://bit.ly/2OWyt2x

प्रतिष्ठा में,

घर वापसी के सम्बन्ध में आवश्यक सूचना

आर्यसन्देश के समस्त सम्मानीय पाठकों एवं आर्यजनों से निवेदन है कि आपके सम्पर्क में यदि कोई ऐसे महानुभाव हों जो ईसाई से वैदिक धर्म में पुन: दीक्षित हुए हों अथवा जिन्होंने स्वेच्छा से वैदिक धर्म को स्वीकार किया हो तो कृपया उनका नाम, पता, सम्पर्क सूत्र, मो. नं. का विवरण aryasabha@yahoo.com पर ईमेल भेजें अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,15 हनुमान रोड़, नई दिल्ली-110001 के पते पर डाक द्वारा भेजें। - ***महामन्त्री***

बच्चों को दें ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजन से भरपूर शहीदों की अमरकथाओं पर आधारित कॉमिक्स

प्राप्ति स्थान

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001

मो. 9540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह